# अरविन्द कुमार त्रिपाठी


# द्वारा

# पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन







राजा व राजनैतिक परिवेश
**Kingdom & Political Scenario**

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

## राजा व राजनैतिक परिवेश Kingdom & Political Scenario

| | |
|---|---|
| अध्याय शीर्षक | राजा व राजनैतिक परिवेश |
| सर्वाधिकार | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| आइ एस बी एन / **ISBN** | **978-93-5906-820-6** |
| प्रकाशक | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक<br>ग्राम – अछरौन्ड,<br>बान्दा – 210 001<br>उत्तर प्रदेश |
| मूल्य | निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना |
| सन्स्करण | प्रथम, 01 अप्रैल 2020 |
| आवरण / मुखपृष्ठ | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| शब्द – संयोजन | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| मुद्रक | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| सन्दर्भ / साभार / सौजन्य | अध्याय **Reference** देखे |

| | |
|---|---|
| **Chapter Heading** | **Kingdom & Political Scenario** |
| **Copyright @** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **ISBN** | **978-93-5906-820-6** |
| **Publisher** | **Arvind Kumar Tripathi**<br>**Village - Achharaund**<br>**Banda - 210 001**<br>**Uttar Pradesh** |
| **Price** | **Free, Circulate to Friends** |
| **Edition** | **First, 01 April 2020** |
| **Cover Main** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **Word Compositor** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **Printer** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **Reference/ Gratitude/ courtesy** | **Peruse Chapter - REFERENCE** |

राजा व राजनैतिक परिवेश **Kingdom & Political Scenario**

## अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

**राजा व राजनैतिक परिवेश Kingdom & Political Scenario**

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – राजा व राजनैतिक परिवेश का संक्षिप्त वर्णन

**राजा व राजनैतिक परिवेश Kingdom & Political Scenario**

# अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

राजवन्श का सन्क्षिप्त इतिहास–

बुन्देलखण्ड के इस भू–भाग में महाजनपद युग से लेकर उत्तर मध्यकाल तक साहित्य वास्तु, मूर्तिकला, चित्रकला, सन्गीत और नाट्य आदि का सृजन बड़े रुपो में हुआ। बुन्देलखण्ड में राजवन्श के इतिहास में यहाँ पर मौर्य, शुन्ग, नाग, गुप्त, गुर्जर–प्रतिहार, चन्देल आदि राजाओं ने राज्य किया। इस समय इस भू–भाग का गौरव उच्च शिखर तक पहुँचा। भारतीय इतिहास में गुप्त शासनकाल ''स्वर्णयुग'' के नाम से प्रसिद्ध है। उस समय नचना, झुमरा, खोह, ऊपेहरा आदि स्थल भारतीय कला के प्रमुख केन्द्र बने। गुप्त राजाओं के समय कला में चारुता को प्रमुख स्थान दिया गया।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र से जुड़े विषय पर राजवन्श के इतिहास पर क्रमबद्ध ध्यान देना आवश्यक है। अतः क्रमशः कौन–कौन से शासक हुए और उनकी वन्श परम्परा कैसी रही, किस शासक के समय राज्यकाल कैसा रहा यह जानना अति आवश्यक है। इससे पहले प्राचीनकाल को देखना आवश्यक है।

''अत्यन्त प्राचीनकाल लगभग 50,000 वर्ष पूर्व केन, बेतवा, पयस्वनी, बागें चम्बल तथा इनकी सहायक नदियों के ंज पर कोल, गोंड, पुलिन्द, शबर, बहेलिया, कौन्दरा गुरिन्दा सौर आदि जातियाँ स्वतन्त्रतापूर्वक घने वनों में निवास करती थी। इनका आहार वनोत्पादन–शहद, कन्दमूल, फल–फूल तथा वन्य पशु थे। इनका सामाजिक जीवन पशुवत् था। कालान्तर में पूर्व और मध्यवर्ती पाषाण युग में अस्त्र–शस्त्रों का प्रयोग प्रारम्भ हो गया जो आकृतिविहीन, भारी और फेन्कने में कष्टसाध्य थे। इस प्रकार के पाषाण कालीन अस्त्र सागर, ललितपुर, पन्ना, बान्दा, चित्रकूट, हमीरपुर आदि जनपदो में नदियों के किनारे भारी मात्रा में प्राप्त हैं। उत्तर पाषाण युग के अस्त्रों के साथ शैलाश्रय भी उक्त स्थानों में दृष्टव्य है। चरखारी के समीप इस सभ्यता के चिन्ह प्राप्त होने की सम्भावना प्राप्त होती है।
+1

बुन्देलखण्ड विन्ध्य ''हिमालयोर्मध्य देशः'' अथवा मनु स्मृति के अनुसार हस्तिनापुर से दक्षिण पूर्व तथा प्रयाग से पश्चिम का देश है। यहाँ पर आर्यों के अलावा शक, सीथियन, हूण, कल्चुरि, गुर्जर, प्रतिहार, परमार, राठौर, राष्ट्रकूट, चौहान, तुर्क अफगानों के साथ–साथ त्रिपुरी, जबलपुर, मालवा, गुजरात नरेश सभी के सैन्य अभियानों का सामना दृढ़तापूर्वक करना पड़ा।

1500 ई0 पूर्व तक भगवान परशुराम के काल में आदिकवि बाल्मीकि, अत्रि, अनुसुइया, अगस्त्य, सुतीक्ष्ण, मार्कण्डेय, भरद्वाज, शरभन्ग, पाराशर, वेदव्यास आदि के आश्रम जलाशय पर्वत उपव्यकाओं में स्थापित थे। समस्त आश्रम विद्या एवम् आर्य सन्स्कृति के केन्द्र बिन्दु थे। ऋग्वैदिक काल में यमुना नदी के दक्षिणी तट पर स्थित बसु या कमु चैद्य का विवरण प्राप्त है जो चेदि वन्शीय राजा था और अपनी दानशीलता के लिए प्रसिद्ध था।

रामायण काल में चित्रकूट कालिन्जर का क्षेत्र, दण्डकारण्य के अन्तर्गत था। यहाँ पर यत्र–तत्र ऋषियों के आश्रम, उनके चारों ओर जनजातियां– कोल, निषाद, शबर, पुलिन्द आदि निवास करते थे। द्वापर युग में चेदि प्रदेश राजा शिशुपाल तथा दन्तवक्र के अधीन था। शिशुपाल की राजधानी चन्देशी तथा दक्षिणी प्रदेश शुक्तिमती थी। महाकाव्य तथा जैनकाव्य में उत्तरी भारत 16 महाजनपदों में विभक्त था। उनमें से चेदि, दशार्ण, वत्स के भू–भाग बुन्देलखण्ड में स्थित थे। दशार्णं धसान नदी के समीप का भू–भाग था। सुधर्मा, हिरण्यवर्मा की राजधानी विदिशा थी। दशार्ण की राजकुमारी से शिखन्डी का विवाह हुआ। पान्चाल के आधीन ग्वालियर से केन नदी तक का प्रदेश था। यमुना नदी के किनारे के भू–भाग को वत्स कहते थे, तथा कौशाम्बी इसकी राजधानी थी।

सम्राट चन्द्रगुप्त का शासन सम्पूर्ण उत्तरी भारत में था। सम्राट अशोक पाटलिपुत्र से 256 दिन की धर्मयात्रा करते हुए गुर्जरा (दतिया) में सिन्हासनासीन होने के तेरहवें वर्ष में ईसापूर्व 257 में पधारे थे। सम्राट अशोक का नाम इस शिलालेख में देवानामप्रिय अन्कित है। यहाँ के निवासी शाक्त मत के समर्थक होने के कारण पशुबलि, नरबलि देते थे। अहिन्सा उनके लिए त्याज्य था। इस समय की जनजातियां अधिकान्श मद्यपी व मान्साहारी थी। यहाँ के लोग हिन्सा लूट–पाट में सन्लग्न रहते थे।

आर्य सभ्यता का प्राचीन केन्द्र एरन या एरिकेण है। पाण्डुवन्शीय राजाओं ने हस्तिनापुर के स्थान पर यमुना नदी के तट पर स्थित कौशाम्बी को अपनी राजधानी बनाई। पुरुरवा और ऐल के प्रपौत्र ययाति ने मध्य देश जीत लिया। इनके पान्च में से ज्येष्ठ पुत्र यदु को चर्मण्यवती, वेत्रवती और शुक्तिमती नदी के बीच का प्रदेश प्राप्त हुआ। चेदिवन्शीय यादवों को कुरुवन्शीय वसु ने हराया। इनकी राजधानी शुक्तिमती थी। बाहु और सुबाहु इसी वन्श में उत्पन्न हुए। निषेध के नल की पत्नी ने सुबाहु के पास शरण ली। दमयन्ती की प्राप्ति राजा नल को चित्रकूट के पास हुई।

चेतिय जातक के अनुसार उपचर के पान्च पुत्र थे। इनको मान्धाता का वन्श कहा गया। चेदि में वितिहोत्र शासक ये। इनकी राजधानी सुत्थिवती थी। राजा युधिष्ठिर के पुत्र इस क्षेत्र के अधिपति थे। एरच के शासक दाम मित्र का ब्राह्मी लिपि में इष्टिकाभिलेख ईसापूर्व प्रथम शती में प्राप्त हुआ है। इन्होंने अश्वमेघयज्ञ सर्वमेघयज्ञ सम्पन्न किये थे तथा इनकी वन्शावली प्राप्त हुयी। भित्र नामधारी शासकों का राज्य ईसापूर्व द्वितीय शती में था। उनका केन्द्र बिन्दु कौशाम्बी था।

मौर्यवन्श के पतन के बाद ब्राह्मण वन्शीय राजाओं का आधिपत्य बढ़ा जिनमें शुन्ग, काण्ड और शातवाहन प्रमुख थे। इनका रान्ज्यकाल 184 ई0पू० से 78ई0 तक रहा। कहा जाता है कि पुराण व स्मृतियां की रचना इसी काल में हुयी थी। बुन्देलखण्ड में नागवन्शीय क्षत्रियों का उदय कुषाणों के उदय के साथ हुआ। नाग राज्य एक सन्घ राज्य था तथा ये शैवमतावलम्बी ये।

वाकाटकों का राज्य पश्चिमी बुन्देलखण्ड में 300 व 520 ई0 के मध्य था। वाकाटकों का उद्‌भव बाधाट बेतवा नदी के तट पर माना जाता है। इस वन्श के प्रतापी राजा भीमसेन ने विन्ध्यशक्ति की उपाधि धारण की और पूर्वी बुन्देलखण्ड के भूभाग को जीत लिया। इनका युद्ध समुद्रगुप्त से हुआ। गुप्त राजाओं ने धसान, केन, बेतवा नदी के मध्य का क्षेत्र इनके अधीन हो गया। नागवन्शीय राजकुमारी से प्रवरसेन का विवाह हुआ। रुद्रसेन द्वितीय ने चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री से विवाह किया। इस वन्श के अन्तिम राजा हरिषेण हुए। समूचा बुन्देलखण्ड 290ई0 400ई0 तक गुप्त राजाओं के आधीनस्थ था। बुन्देलखण्ड का शेष भाग नागों और वाकाटकों के अधीन था।

गुप्तवन्श के पतन के पश्चात् देश अनेकानेक स्वतन्त्र राज्यों में विभक्त हो गया। कल्चुरि (कल्प—मदिरा, चुरी—चुराने/बनाने वाले) प्राचीन जाति हैं। इनका सम्बन्ध रामायण काल में सहस्त्रर्जुन, महाभारत काल में हैहय तथा चेदि से जुड़ा हुआ है। कल्चुरि नरेश प्रथम (कृष्ण प्रथम) ने कालिन्जर पर अधिकार कर कार्लीजरपुराधीश्वर तथा दहाला—विड़न्गा की उपाधि ग्रहण की।

कन्नौज के प्रतिहार नरेशों ने कल्चुरियों से सत्ता छीन ली। सागर जनपद स0 919 वि0 में कन्नौज के अधीन था। नागभट्ट ने कौशाम्बी के वत्स नरेशों को पराजित कर बान्दा जनपद का पूर्वी भाग प्राप्त कर लिया। नागभटूट की मृत्यु के पश्चात् उत्तराधिकार युद्ध में चन्देलवन्श के प्रथम शासक नन्नुक ने रामभद्र के निर्बल शासन से मुक्त होकर स्वतन्त्र राज्य लगभग सन् 830 ई0 में स्थापित किया। उसने नृपति महीपत की उपाधि धारण कर सन् 850 ई0 तक राज्य किया। उसका राज्य खजुराहो महोबा तक ही था।

चन्देलवन्श के विकास की प्रारम्भिक अवस्था में नन्नुक चन्देल का महत्वपूर्ण योगदान रहा। नन्नुक का दूसरा नाम चन्द्रवर्मा था। इनका राज्यकाल 825 ई0 से 840 ई0 तक माना जाता है। इसके बाद इनका उत्तराधिकारी वाक्यपति का शासनकाल 845 ई0 से 865 ई0 तक रहा। वह बड़ा वीर एवम् साहसी था। वाक्यपति ने विन्ध्य की ओर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। चन्देलवन्श में वाक्यपति के पश्चात् उसके दो पुत्र जयशक्ति या जेजा और विजय शक्ति प्रसिद्ध हुए। वे अपने पराक्रम और कुशाग्रबुद्धि के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध थे। इनका काल 865 ई0 से 885 ई0 तक माना जाता है। जयशक्ति ने अपने नाम पर राज्य का नाम जेजाकभुक्ति रखा, यह महोबा के एक अभिलेख में अन्कित है। जयशक्ति और विजयशक्ति चन्देल राज्यकाल इतिहास में अत्यन्त प्रसिद्ध है। विजयशक्ति का उत्तराधिकारी पुत्र राहिल का शासन 885 ई0 से 905 ई0 तक था। वह बहुत ही वीर एवम् पराक्रमी योद्धा था और शत्रु उसका लोहा मानते थे।

धीरे—धीरे परिस्थितयां अनुकूल होती गई और राहिल का पुत्र हर्षदेव चन्देलवन्श का महत्वपूर्ण राजा बना। हर्षदेव का शासनकाल 905 ई0 से 925 ई0 तक रहा। चन्देल साम्राज्य के वैभव का विकास इन्हीं के काल से प्रारम्भ होता है। हर्षदेव के पुत्र यशोवर्मन द्वारा चन्देल शक्ति का विकास अधिक हुआ। यशोवर्मन ने अपने पिता की नीति का अनुसरण किया और विशाल साम्राज्य का विस्तार किया खजुराहो अभिलेख के अनुसार यशोवर्मन ने कालिन्जर के पर्वत को जीत लिया अपने पड़ोसियों से सफलतापूर्वक युद्ध किया और विष्णु के सुहावने चमकीले मन्दिर का निर्माण कराया जो बर्फीले पहाड़ की चोटियों को चुनौती देता है। यशोवर्मन ने चन्देल साम्राज्य के विकास में अपूर्व योगदान दिया है। उसने गौड़, चेदि, कुरु, खज, कौशल, मालवा, कश्मीर तथा गुर्जरों पर विजय प्राप्त की। यशोवर्मन का पुत्र राजा धन्ग चन्देलवन्श का कुशल योद्धा था। धन्ग का शासनकाल 950 ई0 से 1002 ई0 तक रहा। राजा धन्गदेव ने अनेकों लड़ाईयों में विजय प्राप्त कर अपने राज्य का विस्तार किया। उसके राज्य की सीमा कालिन्जर से मालवा नदी तक, मालवा से कालिन्दी, कालिन्दी से चेदि तथा चेदि से ग्वालियर तक थी। धन्गदेव पराक्रमी योद्धा होने के साथ दानी, विवेकी, बुद्धिमान और कलप्रेमी था। चन्देल अभिलेख के अनुसार धन्ग महमूद के तुल्य ही शक्तिशाली था। चन्देल नरेश धन्ग साहित्य, स्थापत्य आदि कलाओं का सन्रक्षक था। विश्वनाथ मन्दिर राजा धन्ग की स्थापत्य कला की रुचि का महत्वपूर्ण उदाहरण है। उसके शासनकाल के समय तीन मन्दिरों का निर्माण हुआ।

1. विश्वनाथ मन्दिर
2. पार्श्वनाथ मन्दिर
3. बैद्यनाथ मन्दिर।

वीर राजा धन्ग पराक्रमी योद्धा, कुशलशासक, भारतीय सन्स्कृति एवम् सभ्यता का पुजारी एवम् कला प्रेमी था। राजा धन्ग का पुत्र गन्डदेव (999 ई0 से 1025 ई0 तक) उसी के समान प्रतापी राजा था। वह दूरदर्शी राजनीतिज्ञ था। उसने महमूद गजनबी के आक्रमणों को रोकने के लिए राजाओं के साथ सन्युक्त रुप से मुकाबला करने के लिए अपने पुत्र को जयपाल के सहायतार्थ भेजा किन्तु कन्नौज नरेश जयपाल की कायरता से योजना सफल न हो सकी। विद्याधर ने जयपाल का वध कर त्रिलोचनपाल को राजा बनाया। महमूद ने ग्वालियर तथा कालिन्जर पर चढ़ाई की लेकिन विजय प्राप्त न कर सका, समानता की सन्धि हो गयी। गन्डदेव के पश्चात् उसके पुत्र विद्याधर (1025 ई0 से 1040 ई0 तक) गद्दी पर आसीन हुआ। विद्याधर ने युद्ध की राजनीति के अलावा कला और साहित्य के प्रति अपनी वन्श परम्परा का निर्वाह किया। एक अभिलेख के अनुसार विश्व के अनन्य उपासक के रुप में चन्देलवन्शी नृपति विदित था जिसे विद्याधर माना जा सकता है। विद्याधर की मृत्यु के बाद चन्देल शासकों का ध्यान अधिकान्शतयाः महोबा, अजयगढ़ और कालिन्जर की ओर आकर्षित हुआ जहाँ से मुसलमानी आक्रमणों का मुंह तोड़ उत्तर दे सकते थे।

चन्देलों के अन्तिम शासकों में से विजयपाल, कीर्तिमान, मदनवर्मन आदि ने राज्य को विकसित व निर्माण की परम्परा को स्थापित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। विद्याधर का पुत्र विजयपाल (1040 ई0 से 1050 ई0) शान्तिप्रिय निर्बल शासक था। देववर्मा मात्र दो वर्ष राज्य कर पाया। कीर्तिवर्मा (1053 ई0 से 1100 ई0) ने खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया। इसके पश्चात् सलक्षवर्मा ने (सन् 1100 ई0 से 1110 ई0) शासक पद सम्भाला। उसने खजुराहो में अनेक मन्दिरों का निर्माण कराया और सलक्षणपुर बसाया।

महाराजा परिमाल चन्देलकाल के चन्देली महाकवि "जगनिक" ने महाकाव्य "आल्हाखण्ड" में चन्देली वैभव, पराक्रम तथा सेना नायकों आल्हा ऊदल की वीरता और रणकुशलता का यशस्वी वर्णन किया है। इसी वन्श में महोबा के अन्तिम राजा परिमाल चन्देल हुए। इनका जन्म स्थान कालिन्जर है। परमालदेव सन् 1165 ई0 में गद्दी पर बैठे। उरई के प्रतिहारो को अस्तित्वविहीन कर माहिल की बहिन मल्हना देवी से विवाह किया। प्रसिद्ध वीर आल्हा, भाई ऊदल तथा पुत्र हदल आदि अज्ञेय योद्धा थे। कुन्डार में खूब सिन्ह , खन्गार, नायब किलेदार थे। माहिल ने परमालदेव से चुगली कर आल्हा, भाई ऊदल को महोबा से निष्कासित करा दिया। उन्होंने कन्नौज के राजा जयचन्द्र का आश्रय लिया। माहिल ने पृथ्वीराज चौहान को आक्रमण का प्रस्ताव भेज दिया। सन् 1882 ई0 में परमालदेव एवम् पृथ्वीराज का युद्ध महौनी (उरई) में हुआ। जिसमें दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान की जीत हुई। पृथ्वीराज महोबा मदनपुर आदि को लूटता हुआ दिल्ली लौट गया। राजा जयचन्द्र ने कालिन्जर पर आक्रमण किया लेकिन असफलता प्राप्त हुई। इस आक्रमण से परमाल की शक्ति कमजोर पड़ गयी। 1202 ई0 में परमाल की मृत्यु हो गयी। सन् 1203 ई0 में कुतुबुद्दीन ऐबक ने कालिन्जर पर आक्रमण किया। किले की जल व्यवस्था को नष्ट कर किले को जीत लिया। परमाल के शासनकाल का विवरण सेमरा, इछावर, महोबा, चरखारी, मदनपुर के शिलालेखों में प्राप्त है।

त्रिलोकवर्मन ने सन् (1203–1245 ई0) में शाही सेना वापस होते ही कालिन्जर पर अधिकार कर लिया। त्रिलोकवर्मा के उपरान्त वीरवर्मा, भोजवर्मा, हम्मीरवर्मा का उल्लेख मिलता है। हम्मीरवर्मा ने हमीरपुर बसाया। इसके उपरान्त चन्देलशासकों की स्थिति क्रमशः गिरती गयी। चन्देलों के शासन का अन्त सन् 1310 ई0 में समाप्त हो गया। बुन्देलों ने उन्हें मिर्जापुर, बरदी, खटाई (म0प्र0) होते हुये बिहार की ओर प्रस्थान करने के लिए विवश किया। चन्देलों की जगह की पूर्ति बघेलों और बुन्देलों ने की। बघेलों ने बघेलवारी को केन्द्र बनाया। बघेलों ने अपना केन्द्र रीवा बनाया। इनकी प्रारम्भिक राजधानी बान्धवगढ़ बनी जो कालान्तर में रीवा हस्तान्तरित हो गई।

बुन्देले मूल रुप से कन्नौज के गहड़वाल या गहरवार की एक शाखा है जो बुन्देलखण्ड मे आने के कारण बुन्देले कहलाये। काशी राज्य के एक राजकुमार हेमकरण ने असन्तुष्ट होकर विन्ध्यवासिनी देवी की शरण में आकर पान्च बार अनुष्ठान किया ओ पन्चमनाधारी बनकर सन् 1048 ई0 गहोरा की ओर प्रस्थित हुआ। हेमकरण ने अपनी स्थिति को सुदृढ़ कर उसने महौनी (उरई) पर आक्रमण कर एक राज्य की स्थापना की। हेमकरण की मृत्यु सन् 1071 ई0 में हो गई। महौनी को केन्द्र बनाकर वीरभद्र तथा कर्णपाल ने शासन किया। सोहनपाल ने गढकुन्डार के खन्गारों से छलपूर्वक (असन्तुष्ट सरदारों के सहयोग से) राजा को सपरिवार समाप्त कर कब्जा कर लिया। सन् 1257 ई0 में उन्होंने इसे अपनी राजधानी बनाया। गुलामवन्श के पतनकाल में निकटवर्ती क्षेत्र जीत लिए। उन्होंने चन्देलों की निर्बल सत्ता

को महोबा से उखाड़ फेंका। अलाउद्दीन खिलजी ने सम्पूर्ण उत्तरी भारत को जीत लिया। गढ़कुन्डार पर आक्रमण कर मोहम्मद तुगलक ने उसे नष्ट कर दिया। तैमूर लोगों के आक्रमण से केद्रीय सत्ता निर्बल हो गयी। इसका लाभ बुन्देलों ने राज्य विस्तार के माध्यम से उठाया तथा कालिन्जर तक का क्षेत्र ले लिया। इस समय सत्ता सन्घर्ष का क्षेत्र कालपी बन गया। जौनपुर, कन्नौज, मालवा, गुजरात सभी की गृद्ध दृष्टि इस ओर केन्द्रित हुयी। कालपी के मलिकजादा शासकों ने साहित्य की समृद्धि की। लोदीवन्शीय सत्ता प्राप्त एवम् सत्ताच्युत राजकुमारों का केन्द्र कालपी बना रहा। बुन्देलखण्ड ने अपनी राजधानी गढ़कुन्डार से स्थानान्तरित कर ओरछा बना ली जो कालान्तर में बुन्देलखण्ड की कला और सन्स्कृति का अप्रतिम केन्द्र बन गया। +2

" चन्देलों के पराभव के बाद और मुस्लिम शासन काल के मध्य इस प्रदेश में बुन्देलों की सत्ता का उदय हुआ। जिसके कारण यह प्रदेश बुन्देलखण्ड नाम से प्रसिद्ध हुआ। विन्ध्याचल पर्वत के अन्चल में बसा हुआ यह प्रदेश पहले विन्ध्येल, फिर बुन्देल और बाद में बुन्देलखण्ड के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अन्य मान्यताओं के अनुसार बुन्देलों की उत्पत्ति भगवान के वन्शजों से हुई इसी वन्श में वि0 सम्वत् 731 में गहरवार राजा कर्तराज हुये, जिन्होंने काशी में दिवोदस नामक राजपूत राजा से युद्ध जीतकर काशी पर अधिकार कर लिया। राजा कर्तराज ने अपने राज्य को शनि के प्रभाव से मुक्त करने के लिए एक ग्रह निवारण यज्ञ करवाया, जिसके कारण वे ग्रह निवार कहलाये। जो बाद में गहरवार में परिवर्तित हो गया। कर्तराज के बाद उनके पुत्र मिहिरदेव तत्पश्चात् उनके पुत्र वीरभद्र राजा बने। वि0 सम्वत् 1105 में वीरभद्र की मृत्यु के पश्चात् उनके सबसे छोटे पुत्र पन्चम शासक बने वे अपने पान्च भाईयों में सबसे छोटे थे किन्तु सबसे योग्य थे। अन्य भाईयों के हिस्से में छोटी–छोटी जागीरें आई। भाईयों को यह बन्टवारा स्वीकार नहीं था। इस कारण उन्होंने मिलकर राजा पन्चम पर आक्रमण कर दिया तथा उन्हें राज्य से निष्कासित कर दिया। राजा पन्चम विन्ध्यवासिनी देवी के मन्दिर में जाकर आराधना करने लगे। देवी के आशीर्वाद से सम्वत् 1113 में हुए युद्ध में राजा पन्चम विजयी हुये। उनके वन्शज बुन्देला के नाम से प्रसिद्ध हुए। राजा पन्चम की मृत्यु के पश्चात् सम्वत् 1128 (सन् 1071 ई0) में उनके पुत्र वीर सिन्ह राजा बने। उन्होंने लगभग 16 वर्षें तक राज्य किया। उन्होंने राज्य का विस्तार किया और महौनी को अपनी राजधानी बनाया। उनके वन्श में तीसरी पीढ़ी में राजा सोहनपाल ने सम्वत् 1313 –1314 (सन् 1257 ई0) में खन्गार राजा हुरमत सिन्ह को हरा कर गढ़कुन्डार पर अधिकार किया तथा उसे अपनी राजधानी बनाया। राजा सोहनवाल की मृत्यु के बाद उन्हीं के वन्श के राजा मलखान सिन्ह ने साम्राज्य विस्तार के उद्देश्य से सन् 1478 ई0 में बहलोल लोदी से युद्ध किया। मलखान सिन्ह की मृत्यु के पश्चात् रुद्रप्रताप ने अपना प्रभाव बढ़ा लिया। वैशाख सुदी 3 सम्वत् 1588 को रुद्रप्रताप देव ने अपनी राजधानी गढ़कुण्डार से ओरछा स्थानान्तरित की। उनके शासनकाल में ओरछा में बुन्देलों का महत्व बढ़ता गया। +5

सन् 1531 ई0 में राजा रुद्प्रताप देव शेर के पन्जे से गाय को छुड़ाने में बुरी तरह से घायल हो गये थे और कुछ दिन बाद उनकी मृत्यु हो गई थी। राजा रुद्र प्रताप देव के बारह पुत्र थे– भारतीचन्द्र, मधुकरशाह, उदयाजीत, कीरतशाह, भूपतशाह, अमानदास, चन्दनदास, दुर्गादास, घनश्यामदास, प्रयागदास, भैरवदास और खन्डेराय। सन् 1531 से सन् 1554 ई0 तक भारतीचन्द्र ने ओरछा में शासन किया। पारिवारिक विवाद के कारण प्रतापदेव की दूसरी रानी मेहरबान कुन्वर अपने पुत्र उदयाजीत (रुद्र प्रताप तीसरे पुत्र) को साथ लेकर कटेरा में रहने लगी। वही पर उदयाजीत ने महोबा राज्य की स्थापना की। उन्हीं के वन्शज चम्पतराय और छत्रसाल ने आगे चलकर पन्ना तथा छतरपुर तक बुन्देलों की शक्ति का प्रसार किया।

" वीर छत्रसाल बुन्देला बुन्देलखण्ड की आलौलिक विभूति थे। वे आलौकिक प्रतिभा के धनी इतिहासकारों के मतानुसार वे बुन्देला स्वातन्त्रय युद्ध के प्रथम और अमर सेनानी थे। उन्होंने मुगलों की दासता कबूल नहीं की और पन्ना राज्य सन्घर्षों के बीच अलग से बना। वीर छत्रसाल ने बंगश से युद्ध करने के लिए पेशवा का सहयोग प्राप्त किया था। अतः उन्होंने जब अपने पुत्रों में राज्य का विभाजन किया तो पेशवा के सामन्त को गुरसराय आदि की गढ़ी दे दी। छत्रसाल ने पेशवा को अपना दत्तक पुत्र घोषित कर राज्य का तिहाई भाग का उत्तराधिकारी बताया। 4 दिसम्बर 1731 ई0 को 81 वर्ष और 7 माह की आयु में वीर बुन्देला तथा वीरता का धनी इस सन्सार से सदैव के लिए उठ गया परन्तु उनके वैभव के गान बुन्देलखण्ड के कण–कण में आज भी गुन्जित हो रहे हैं।" +3

भारतीचन्द्र के पश्चात् ओरछा के राजा मधुकर शाह हुये। इनका अकबर के साथ सन्घर्ष चला। ओरछा का सबसे अधिक विस्तार मधुकरशाह के शासनकाल में हुआ। गणेश कुन्वरि इनकी रानी थीं। ये राम की अनन्य भक्त थी। कहा जाता है कि वे राम को अयोध्या से लेकर आई थीं उन्होंने ओरछा में राम राजा की स्थापना की। इन्हीं के वन्श में बाद में वीर सिन्ह देव प्रतापी राजा हुये। वीर सिन्ह देव का नाम अबुल फजल का वध करने के कारण सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में प्रसिद्ध हुआ। ये जहान्गीर के समकालीन थे। वीर सिन्ह देव के शासनकाल में सन् 1605–27 ई0 में ही ओरछा में जहान्गीर महल का निर्माण हुआ। इस महल को हिन्दू–मुस्लिम स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना कहा जाता है। वीर सिन्ह जूदेव प्रथम वि0 सम्वत् 1660 में पूरे बुन्देलखण्ड का राजा घोषित किया गया। वे प्रजा पालक, धार्मिक

एवम् जनप्रिय शासक थे। देव सिन्ह जूदेव का देहावसान वि0 सम्वत् 1682 में हुआ। इनके पुत्र जुझार सिन्ह, हरदौल, पहाड़ सिन्ह , चन्द्रभान, माधो सिह, भगवानराय, नरहरदास, और बेनीदास थे। इनके बड़े पुत्र जुझार सिन्ह गद्दी पर बैठे। इनके भाई हरदौल सेना नायक के पद पर आसीन रहे। दोनों भाईयों की वीरता से इस प्रान्त में शौर्य की पताका फहरती रही। हरदौल ने अपने भाई के भ्रम को दूर करने के लिए अपनी भाभी के हाथों सहर्ष विष का पान कर अपने आप को बलिदान किया

राजा जुझार सिन्ह की मृत्यु के बाद सात वर्ष तक मुस्लिम शासन रहा। वि0 सम्वत् 1698 में वीर सिन्ह देव के तीसरे पुत्र पहाड़ सिन्ह राजा के पद पर आसीन हुए। सम्वत् 1720 में पहाड़ सिन्ह की मृत्यु गई। बुन्देलों में फूट पड़ जाने से पन्ना, दतिया आदि अनेक स्वतन्त्र राज्य स्थापित हुए। इसके बाद ओरछा में अनेक शासक बदलते रहे। सुजान सिन्ह , इन्द्रमणि, यशवन्त सिन्ह , भगवन्त सिन्ह , उद्योत सिन्ह , हेर सिन्ह , मान सिन्ह , विक्रमाजीत, धर्मपाल, तेज सिन्ह , सुजान सिन्ह , हम्मीर सिन्ह , प्रताप सिन्ह और सवाई महेन्द्र वीर सिन्ह जूदेव द्वितीय। महेद्रवीर सिन्ह जूदेव ओरछा के अन्तिम शासक थे। इनके शासनकाल में बुन्देलखण्ड की कला, सन्स्कृति व साहित्य का विकास हुआ। इस क्षेत्र में स्वतन्त्रता के युद्ध में मराठों का योगदान बढ़–चढ़ कर रहा। महाराज छत्रसाल को बाजीराव पेशवा ने मुगलों से मुक्त कराया। सम्वत् 1730 में मराठी व बुन्देलों ने मिलकर मुगलों को परास्त किया।

सम्वत् 1781 में दिल्ली के सुल्तान ने पेशवा को सनद दी जिससे सम्पूर्ण भारत में मराठों को चौथ वसूलने का अधिकार मिल गया। इनको बुन्देलखण्ड पर अधिकार मिल गया। इस समय अन्ग्रेज भारत पर पैर जमा चुके थे। शमशेर बहादुर की सेना तथा अन्ग्रेजों की सेना में सम्वत् 1803 में केन नदी के किनारे युद्ध हुआ। शमशेर बहादुर की पराजय होने से बुन्देलखण्ड पर अन्ग्रेजों का अधिपत्य स्थापित हो गया।

प्रसिद्ध इतिहासकार सुरेन्द्र नाथसेन के अनुसार– सन्1838 में गन्गाधर राव कोसी का राजा घोषित कर दिया गया। सन् 1890 ई0 में मनुबाई से इनका पाणिग्रहण सन्स्कार हुआ। सन् 1851 ई0 में पन्द्रह वर्ष की आयु में उनको पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। चार माह पश्चात् उस बालक का निधन हो गया। 21 नवम्बर सन् 1853 में महाराजा गन्गाधरराव का निधन हो गया। राजा गन्गाधरराव ने अपने जीवनकाल में ही अपने परिवार के बालक दामोदर राव को दत्तक पुत्र मान लिया था। अन्ग्रेजों ने दत्तक पुत्र की प्रथा समाप्त कर दी थी। इस पुत्र का अन्ग्रेजों ने कड़ा विरोध किया, पर रानी ने इनकी एक न सुनी। 27 फरवरी सन् 1854 ई0 को लार्ड डलहौजी ने गोद नीति के अन्तर्गत दत्तक पुत्र दामोदरराव को अस्वीकृत कर झान्सी को अन्ग्रेजी राज्य में मिलाने की घोषणा कर दी। रानी ने अन्ग्रेजों से युद्ध लड़ने की चुनौती स्वीकार की। भारत के प्रथम स्वाधीनता सन्ग्राम में अन्ग्रेजों के विरुद्ध रानी ने आन्दोलन छेड़ दिया। बानपुर, शाहगढ़ तथा बान्दा आदि रियासतो ने भी उनका साथ दिया। 18 जून 1858 ई0 को ग्वालियर का अन्तिम युद्ध हुआ और महारानी ने सेना का कुशल नेतृत्व किया। इस युद्ध में महारानी घायल हो गई और युद्ध में उन्होनें वीरगति प्राप्त की।

झान्सी के वन्शजों का नाम रानी ने अपनी वीरता, त्याग, बलिदान एवम् देश के प्रति समर्पण की भावना को प्रकट कर सदा–सदा के लिए स्वर्ण अक्षरों में अन्कित कर दिया। बुन्देलखण्ड भी विदेशों में झान्सी की रानी की वीरता के कारण ही जाना जाता है, क्योकि उन्होनें एक स्त्री होते हुये भी निडर हो कर अन्ग्रेजों का सामना किया और अन्त में वीरगति को प्राप्त हुई। झान्सी की रानी की समाधि के सम्बन्ध सुभद्रा कुमारी चौहान की कुछ पंक्तियाँ निम्न है–

इस समाधि में छिपी हुई एक राख की ढेरी।
जिसने जलकर स्वतन्त्रता की दिव्य आरती फेरी।।

डा० बृन्दावन लाल वर्मा ने अपने सुप्रसिद्ध उपन्यास ''झान्सी की रानी लक्ष्मीबाई'' में अपने निम्न विचार प्रकट किये– रानी लक्ष्मीबाई स्वराज्य के लिए लड़ी। वह स्वतन्त्रता के युद्ध में एक अमर सेनानी थी। उनका जीवन देश के लिए था और इस स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए किए गए प्रथम स्वतन्त्रता के युद्ध में लड़ते–लड़ते अपने प्राणों का उत्सर्ग कर गई।

प्रसिद्ध इतिहासकार सुरेद्रनाथ सेन के अनुसार– नाना साहब के बाद 1857 ई0 के स्वतन्त्रता सन्ग्राम के सर्वद्रोहियों मे रानी लक्ष्मीबाई प्रमुख नेतृत्व करने वाली पहली नारी थी और उन्होनें युद्ध क्षेत्र में एक वीर योद्धा की मृत्यु पाई।

वीर मर्दन सिन्ह बुन्देला आरेछा नरेश महाराजा रामशाह की ग्यारहवीं पीढ़ी में थे। उनके पिता का नाम प्रहलाद था। 18 वर्ष राज्यच्युत रहने के बाद राजा मोद प्रहलाद बानपुर के राजा हो गए और उन्होनें अपना कार्यभार

युवराज मर्दन सिन्ह को सौंप दिया। सन् 1842 ई0 में मोद प्रहलाद का निधन हो गया और राजा मर्दन सिन्ह वानपुर की गद्दी पर आसीन हुए। ये कुशल योद्धा और योग्य प्रशासक थे।

बुन्देलावीर राजा मर्दन सिन्ह महारानी लक्ष्मीबाई के प्रमुख सलाहकार और सक्रिय सहयोगी थे उन्होंने झान्सी, कोच और कालपी के मोर्चों पर डटकर महारानी के साथ अन्ग्रेजों के विरुद्ध युद्ध किया।

''राजा मर्दन सिन्ह मुरार में गिरफ्तार हो गये और सन् 1858 ई0 मे लाहौर भेज दिया गया उन्हें मासिक पेंशन एक हजार रुपये प्रदान की गई और वृन्दावन में रहने की अनुमति भी मिल गई। 22 जुलाई सन् 1879 ई0 में उनका देहावसान हो गया।'' +4

भारत मे धीरे–धीरे राजवन्शों की समाप्ति होती गई और अन्ग्रेजों का राज्य स्थापित हुआ। 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ। नवीन सरकारी नीतियां बनायी गयीं। 26 जनवरी 1950 ई0 को भारत का सम्विधान लागू हुआ। धीरे–धीरे भारत में राजाओं महाराजाओं की वन्श परम्पराओं का अन्त हो गया। भारत में एक सरकारी राज्य की स्थापना हुई।

# अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन


सन्दर्भ सौजन्य साभार

+1, 2 बुन्देलखण्ड का साहित्यिक ऐतिहासिक सान्स्कृतिक वैभव– डा० रमेश चन्द्र श्रीवास्तव (पृ– 154, 160)
+3, 4 बुन्देलखण्ड दर्शन– मोतीलाल त्रिपाठी अशान्त (पृ सन्ख्या– 76, 110)
+5 बुन्देलखण्ड की लोकचित्रकला– डा० श्रीमती मधु श्रीवास्तव (पृ 5–6)
हिन्दी के उपन्यासों में बुन्देलखण्ड